E-ISSN 2582-5429
SJIF Impact - 5.711

AKSHARA
MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2025 Special Issue 16 Volume I (A)

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli

Akshara Publication

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- EISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.711 / January 2025 / Special Issue 16 Volume I (A)

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2025
Special Issue 16 Volume I (A)

Scientific Journal of Impact Factor (SJIF) Impact-5.67

Scientific Journal Impact Factor

TOGETHER WE REACH THE GOAL

International Impact Factor Services

iiJS

International Society for Research Activity (ISRA)
Journal-Impact-Factor (JIF)

JISRA F

Digital Online Identifier-Database System

An International Digital and Virtual Library

Akshara Publication
Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- EISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.711 / January 2025 / Special Issue 16 Volume I (A)

Editorial Board

-: Chief & Executive Editor:-

Dr. Girish Shalik Koli
Dongar Kathora
Tal.Yawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425301
Mobile No: 09421682612
Website:www.aimrj.com Email:aimrj18@gmail.com

-:Co-Editors :-

- **Dr. Sirojiddin Nurmatov,** *Associate Professor, Tashkent Institute of Oriental Studies, Tashkent City, Republic Of Uzbekistan*
- **Dr.Vivek Mani Tripathi,** Assistant Professor, *Faculty of Afro – Asian Languages and Cultures, Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong, China*
- **Dr.Maxim Demchenko** *Associate Professor Moscow State Linguistic University, Institute of International Relationships, Moscow,Russia*
- **Dr.Mohammed Abdraboo Ahmed Hasan,** *Assistance Professor (English) The Republic of Yemen University of Abyan General manager of Educational affairs in University of Abyan ,Yemen.*
- **Dr. Wajira Gunasena,** *Lecturer, Dept of Languages, Cultural studies & Performing Arts University of Sri Jayewardenepura, Nugegoda, Sri Lanka*
- **Shiv Kumar Singh ,** *Lecturer, Indian Faculty of Arts and Humanities, University of Lisbon.. Portugal.*
- **Dr. Vijay Eknath Sonje,** *Assistant Professor* (Hindi) D. N. College, Faizpur [M. S.]
- **Mr. Nilesh Samadhan Guruchal,** *Assistant Professor* (English)Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- **Dr. Shaikh Aafaq Anjum,** *Assistant Professor* (Urdu) Nutan Maratha College, Jalgaon. [M. S.] India.
- **Mr. Dipak Santosh Pawar,** *Assistant Professor* (Marathi)Dr. A.G.D. Bendale Mahila Mahavidyalya, Jalgaon [M. S.] India.

PEER REVIEW POLICY

AMRJ will send a copy of research work to the editorial board. The board will verify the same according to the rules of research methodology. Then plagiarism in the work will be checked. In case if the research methodology is not followed properly by the researcher, message will be given to the researcher and he/she will be asked to revise the work in a stipulated period.

After checking research methodology and plagiarism, the work will be sent to the Peer Review Committee.

SINGLE BLIND PEER REVIEW BY EXPERT PEER REVIEWERS

AMRJ adopts the Single Blind Peer Review Method. After checking research methodology and plagiarism, the work will be sent to the Peer Review Committee for review through email. AMRJ do not disclose the details of researcher to Peer Review Committee. The Peer Review Table will be displayed online according to the criteria decided by the Editorial Board. After the approval by Peer Review Committee, the research work will be published in the Issue. In case if any instructions received from Peer Review Committee, the same will be forwarded to the researcher and he/she will be asked to clear the matter. Editorial Board of AMRJ will be the final authority to decide whether a research work is to be published or not.

AMRJ Disclaimer:

For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of Akshara's editorial Board will not be responsible for anyconsequences arising from the exercise of Information contained in it. AMRJ is an online research jaournal. It is printed only for the conavenience of reading and archiving its online content. ***(Applicable in Jalgaon jurisdiction)***

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- EISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.711 / January 2025 / Special Issue 16 Volume I (A)

Index

Sr. No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	श्रेष्ठ उदात्त जीवन की परिकल्पना में गाँधी दर्शन	डॉ.विवेकानन्द सिंह	05
2	नई शिक्षा नीति और भूगोल शिक्षा	कोशिमा अंसारी	10
3	भारतीय साहित्य शास्त्र में प्रकृति का ऐतिहासिक व कलात्मक गहत्व	डॉ. मुक्ति पाराशर	13
4	रामचरितमानस में वर्णित पारिवारिक एवं सामाजिक आदर्श का स्वरूप	शीला देवी प्रो.शिशिर कुमार पांडेय	15
5	डिजिटल माध्यम में मिथिला कला	अर्चना सिंह डॉ. गुलाबधर	18
6	समकालीन हिंदी कथा साहित्य मे नारी की ज्ञान मूलक मनोवृति	निर्वेश कुमार दीक्षित डॉ. अभिनेष सुराना डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी	21
7	महेंद्र आर्य की 'बडी हवेली' नाटक का राजनीतिक परिदृश्य	डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण	26
8	रेडलाइट एरिया: वेश्यावृत्ति तथा नैतिकता भारत के देह व्यापार क्षेत्रों का एक अध्ययन	डॉ. यामिनी पड़ियार	30
9	रामवृक्ष बेनीपुरी के रेखाचित्र: सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं का चित्रण	प्रो. पंढरीनाथ पाटिल 'शिवांश'	34
10	21 वीं सदी के नाटकों में चित्रित स्त्री: एक अनुशीलन	प्रा. सुजाता सुर्यकांत हजारे डॉ. बाबासाहेब द. कोकाटे	37
11	समकालीन हिंदी नाटककारों का सामाजिक समरसता में योगदान (मोहन राकेश,डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल और डॉ.शंकर शेष के विशेष संदर्भ में)	प्रो.डॉ.विजयकुमार राऊत	39
12	हिंदी नाट्य साहित्य : विविध परिदृश्य (बाल नाट्य साहित्य के सन्दर्भ में)	डॉ. छाया शंकर माळी	43
13	रत्नकुमार सांभरिया के नाट्य साहित्य में सामाजिक परिदृश्य	डॉ. दीपक रामा तुपे	47
14	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना: नाटकों में व्यक्त संवेदनाएँ	प्रो. डॉ. विद्या शशीशेखर शिंदे	53
15	काला पत्थर नाटक - मानवीय मूल्यों का क्षरण एवं परिवर्तन की सम्भावनाएँ	डॉ. संतोष रायबोले	57
16	'चंद्रगुप्त' नाटक में ऐतिहासिक परिदृश्य	प्रो. डॉ. हणमंत महादेव सोहनी	59
17	21वीं सदी का हिंदी नाटक साहित्य: स्त्री विषयक परिदृश्य	श्रीमती अरुणा परशुराम राठोड प्रो. डॉ. ललिता एन. राठोड	62
18	बदलते विवाहेतर संबंधों का दस्तावेज :'दूसरा आदमी, दूसरी औरत'नाटक	डॉ.राहुल मराठे	65
19	मीराकांत के नाटकों में स्त्री	सुनिता नारायण गायकवाड डॉ. बाबासाहेब द. कोकाटे	67
20	समसामयिक नाटककार असगर वजाहत	डॉ. संतोष मोटवानी	69
21	असगर वजाहत का हिंदी नाट्य साहित्य : राजनीतिक परिदृश्य	प्रा.विलास बाळू डोंगरे	71
22	विष्णु प्रभाकर के नाटकों में मानवतावादी जीवन मूल्य	डॉ. विष्णु गोविंदराव राठोड	75

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- EISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.711 / January 2025 / Special Issue 16 Volume I (A)

13

रत्नकुमार सांभरिया के नाट्य साहित्य में सामाजिक परिदृश्य

डॉ. दीपक रामा तुपे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

सारांशः
आज लालची वृत्ति के कारण इन्सान इन्सानीयत भूलकर पत्थर दिल का हो गया है। परिणामी आज भी हमारा समाज जाति–पांति और छुआछूत की बीमारी से पीड़ित है। भारतीय गाँव जातिभेद, छुआछूत तथा रूढ़ि–परंपरा में ही जकड़े हुए हैं। दलितों को गाँव में मंदिर प्रवेश का अधिकार नहीं दिया जाता। दलित यदि संगठित होकर भी रूढ़ि–परंपरा के खिलाफ कोई कदम उठाते हैं तो उन्हें पिटवाया जाता है। उनका अपमान किया जाता है और उन्हें उनके अधिकार से वंचित रखा जाता है। लेकिन आज का शिक्षित युवा अपने अधिकार के प्रति सचेत होकर अपने अधिकार की मांग करने लगे हैं। दलितों के समान विकलांग वर्ग भी शोषण का शिकार रहा है। हालाँकि सशक्त लोग स्वार्थवश निःशक्तों का अपहरण करने लगे हैं। निःशक्तों की असहायता का फायदा उठा रहे हैं। इसलिए वंचित डॉ. बाबासाहब अंबेडकर के संगठन के मार्ग को अपना रहे हैं। असल में संगठन में वहुत बड़ी शक्ति होती है। संगठन चाहे सशक्तों का हो या निःशक्तों का। निःशक्तों के संगठन को लोग कमजोर समझते हैं, मगर निःशक्तों का संगठन यदि अपनी पर उतर आता है तो वह लोहे की गेंद बन जाता है। सचमुच संगठन अन्याय के खिलाफ लड़ने का हथियार है। दलित समाज संगठित होकर गंदे धंधे फूंक रहा है। वर्ण, वर्ग, जाति, धर्म के बंधन तोड़ रहा है और नए सबेरे और नई उम्मीद की कामना कर रहा है। रत्नकुमार सांभरिया के नाट्य साहित्य में उक्त सामाजिक परिदृश्य की पहल अधिक मात्रा में दिखाई देती है।
की–वर्डः जातिभेद, शोषण, शैक्षिक सजगता, सामाजिक यथार्थ और अन्याय–अत्याचार का विरोध।

प्रस्तावनाः सुप्ररिद्ध साहित्यकार रत्नकुमार सांभरिया बहुआयामी रचनाकार है। रेवडी महाविद्यालय के प्रा. डॉ. रामपत यादव से लेखन की प्रेरणा पाकर उन्होंने समाज की कुसंगतियों और विसंगतियों को अपने लेखन का विषय बनाया है। सांभरिया जी का व्यक्तित्व सहृदयता, संवेदनशीलता, आत्मीयता, सहिष्णुता, मिलनसारिता, विनयशीलता एवं गुरुभक्त, भावुकता, ग्रामनिष्ठा, न्यायप्रियता, पारदर्शी स्पष्टवादिता, सुसंवादिता, मितभाषिता, निरपेक्ष व्यवहार, प्रेरक व्यक्तित्व, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, प्रगतिशील दृष्टिकोण, यायावर, मूल्यनिष्ठा, अंबेडकरी विचारों के प्रति आस्था एवं संवाहक, जननिष्ठा, स्त्री–दाक्षिण्य, संस्कार एवं प्रभाव, बहुभाषी, समकालीन रचनाकारों में अलग पहचान, परिवर्तन के हिमायती रचनाकार, निष्ठावान साहित्यकार आदि गुणों से युक्त नजर आता है। रत्नकुमार सांभरिया ने नाटक, एकांकी, कहानी, लघुकथा, आलोचना और संपादन आदि विधाओं में अपनी कलम चलाई है। उनका कृतित्व समाज की कई समस्याओं को उजागर करता है। उनका साहित्य समाज का दर्पण नहीं जबकि दीपक है। उनका यह दीपक डॉ. बाबासाहब अंबेडकर के विचारों की अभिव्यक्ति देता है। उनका साहित्य समाज में व्याप्त जातिभेद, छुआछूत, अन्याय–अत्याचार, अंधविश्वास की सशक्त मिसाल है। उनका साहित्य दलित समाज में उत्साह, उमंग और ऊर्जा भर देता है, चेतित करता है और विकास की संकल्पना को साकार करने का प्रयास करता है। रत्नकुमार सांभरिया के नाटक इन्हीं सामाजिक परिदृश्य की पहल करते नजर आते हैं। उन्होंने दो नाटक लिखे हैं–'वीमा' (2014) और 'उजास' (2014)। इन दो नाटकों में सामाजिक परिदृश्य के अंतर्गत जातिभेद, शोषण, शैक्षिक सजगता, सामाजिक यथार्थ और अन्याय–अत्याचार का विरोध आदि की पहल की हुई दिखाई देती है; जिसका विवेचन–विश्लेषण निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है–

जातिभेदः

वस्तुतः वर्ण व्यवस्था ने जाति व्यवस्था को जन्म दिया है। भारतीय समाज धर्म, जाति, वर्ण, वर्ग तथा कुलगोत्र के नाम पर बँटा हुआ है। "भारतीय जाति व्यवस्था के केंद्र में सबसे ज्यादा उपेक्षित, प्रताड़ित और घृणित दलित वर्ग रहा है।"[1] अपने आपको श्रेष्ठ मानने की प्रवृत्ति ने जातिभेद को बढ़ावा दिया है। व्यक्ति, परिवार, समाज, देश जातिभेद के कारण एक–दूसरे से कटते जा रहे हैं। जातिभेद का जहर गाँव–गाँव तक फैल चुका है। इसी स्थिति का प्रमाण रत्नकुमार सांभरिया के 'वीमा' नाटक में मिलता है। प्रस्तुत नाटक में निःशक्तों का धनी–धोरा आका जब जमन की औकात की बात करता है तब जमन कहता है–"सर, आप इतने बड़े पद पर होकर भी जात जी रहे हैं? बड़े होकर छोटे विचार रखते हैं?"[2]

जमन कथन जातिवादी मानसिकता को उजागर करता है। समाज में आज भी कुछ लोगों की जहन में जात–पांत तथा छुआछूत भरा माहौल जिंदा है। वे जाति–पाति मिटाना अपनी बर्बादी का लक्षण मानते हैं। नीचे जाति के लड़के द्वारा उच्च जाति की लड़की के साथ शादी करना धर्मघात मानते हैं। इसी जातिवादी मानसिकता का जिक्र रत्नकुमार सांभरिया लिखित 'वीमा' नाटक में मिलता है। प्रस्तुत नाटक के श्यामाजी पत्रकार झा से नेत्रहीन जमन वर्मा को मक्कार, धूर्त, पाजी कहता है। पत्रकार झा ने कारण पूछने पर श्यामाजी उन्हें कहते हैं–"नीची जात होकर भी उसने बड़ी जात की लड़की से शादी की है। यह धर्मघात है। जात को मात है। बेटे झा, यह जात–पांत, छुआछूत ही हमारी सांसें हैं। जात मरी, हम बदर हुए।"[3] कहना आवश्यक नहीं कि अंतर्जातीय विवाह धर्मघात नहीं जबकि जाति–पांति या छुआछूत मिटाने का इलाज है। लेकिन सवर्ण समाज जातिभेद को मिटने नहीं देता क्योंकि जात नष्ट होना से उसे अपनी बर्बादी लगती है। आज गाँवों में जातिवाद की दीवारें मजबूत है। वे इस जाति–व्यवस्था के इतने आदी हो चुके हैं कि किसी मंदिर में भगवान का दर्शन करने का साहस नहीं जुटाते। इन्हीं स्थितियों का जिक्र रत्नकुमार सांभरिया के 'उजास' नाटक में मिलता है। जब प्रतिष्ठित ब्राह्मण रामानंद दलित जाति की महिला संती को भगवान का दर्शन करने की सलाह देता है, तब गाँव के रीति–रिवाज, वर्ण–व्यवस्था एवं जाति–व्यवस्था की जानकार संती रामानंद से कहती है–"हम छोटी जात हैं, महाराज। मंदर बड़ी जात का है, महाराज। भगवान भ्रष्ट हो जायेंगे, महाराज। हम मंदर में नहीं जा सकते हैं महाराज।"[4] संती का उक्त कथन गाँव की छुआछूत एवं जातिभेदभावपूर्ण नीति को उजागर करता है। सार यह कि जन्म के आधार पर सदियों से चली आ रही जातीय विषमता ने जातिभेद और छुआछूत की नीति को जन्म दिया है। संविधान प्रदत्त अधिकार, अस्मिता, स्वाभिमान के प्रति सचेत दलित समाज जातिभेद तथा छुआछूत का खुलकर विरोध करने लगा है। अपने आपको सभ्य कहलाने वाला समाज जातपांत के नाम पर प्रेमियों के बीच दरारें पैदा करना चाहता है। वह अंतर्जातीय विवाह करना यानी धर्माघात मानता है। दरअसल अंतरर्जातीय विवाह सही मायने में जातिभेद मिटाने का सार्थक प्रयास है; मगर सवर्ण समाज जातिभेद को मिटने नहीं देता क्योंकि जात ही उनकी सांसें बन चुकी है। यदि समताधिष्ठित समाज निर्माण करना है तो जातिभेद की दीवारें तोड़नी होगी।

शोषण:

भारतीय समाज में वर्णव्यवस्था का स्थान वर्ग व्यवस्था ने लिया है। फलस्वरुप शोषक और शोषित दो वर्ग विभाजित हो गए है। सामंती वर्ग आमजन का शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शोषण कर रहा है। सेठ–साहूकार, जमींदार, ठाकुर–ठेकेदार, पंडे–पुजारी जैसे सामंत श्रमिकों का खून चुस रहे हैं। श्रमिक जी–तोड़ मेहनत करते हैं, मगर उन्हें उचित मुआवजा नहीं मिलता। शोषक शोषितों के साथ अमानवीय व्यवहार करते हैं। मजबूरीवश श्रमिक वर्ग शोषण के शिकार हो जाता है। धर्म तथा शास्त्रों की दुहाई देकर अशिक्षित लोगों का नाजायज शोषण किया जाता है। पंडे–पुजारी, पाखंड़ी भगत अंधश्रद्धा के नाम पर आमजन का आर्थिक एवं शारीरिक शोषण करते हैं। पाप–पुण्य तथा झाड–फूंक के नाम पर पाखंडी व्यक्ति असहाय, गरीब जनता को डरा–धमकाते हैं। वे अज्ञान एवं अंधश्रद्धा के नाम पर शोषण करते हैं। इस शोषण की जड़े समाज में इतनी गहरी है कि जिसको उखाड फेंकना असंभव है। कहा जाता है कि निःशक्त या गरीबों का भगवान भी नहीं होता। आज हर जगह शोषण का बोलबाला है। आज सशक्त व्यक्ति निःशक्त व्यक्ति का शोषण कर रहा है। सबकुछ गोलमाल है अर्थात् शोषण की सरगमें हर जगह व्याप्त है। इसी स्थिति का प्रमाण रत्नकुमार सांभरिया लिखित 'वीमा' नाटक में मिलता है। जमन और वीमा की श्यामाजी को लेकर बातचीत चल रही है। जमन श्यामाजी को भला आदमी समझता है और वह वीमा का घर वाला भी है। जमन श्यामाजी की विकलांग संस्था में म्यूजिक टीचर है; साथ में वह दूसरे विषय भी पढ़ाता है। इस पर वीमा जमन से तनख्वाह के बारे में पूछती है तब जमन व्यंग्य से कहता है–"जो निःशक्त या गरीब होते हैं ना, उनका भगवान भी नहीं होता है। वहाँ भी सब गोल है। यहाँ भी सब गोल है। शोषण की सरगमें हैं यहाँ–वहाँ।"[5] कहना आवश्यक नहीं कि शोषण की सरगमें हर जगह व्याप्त है। शोषित व्यक्ति का इस संसार में कोई नहीं होता। श्यामाजी विकलांग जमन का शोषण करते हैं, मगर श्यामाजी ने जमन को वेतन के बारे में चुप्पी साधने को कहा था; मगर यह बात वह वीमा को बताता है। वह कहता है कि किसी को यह बात बताओगी तो आफत आ जाएगी। तब वीमा इतनी गई–गुजरी नहीं होने का एहसास दिलाती है। तब जमन और वीमा के संवाद शोषण का पर्दाफाश करते हैं–

"जमन: वीमा यह संस्था है ना, सरकार के अनुदान से चलती है। अब मुझे तो दिखता नहीं है। पैन टिकवा कर साइन करा लेते हैं मेरे।

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- EISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.711 / January 2025 / Special Issue 16 Volume I (A)

वीमाः रोकड़?

जमनः रोकड़! साइन तो ज्यादा पर ही कराते बताए। मेरी हथेली पर तो एक हजार रख देते हैं, बस।"[6] स्पष्ट है कि सशक्त लोग अशक्त लोगों का शोषण करते हैं। हमारे देश में धर्म के नाम पर दलितों का शोषण होता आ रहा है। धर्म के नाम पर चौबीस–चौबीस घंटे काम करना आम बात है मगर बदले में मुआवजा भी नहीं मिलता। मिलती है बस नाममात्र खाने की चीजे। इसी स्थिति का चित्रण रत्नकुमार सांभरिया लिखित 'उजास' नाटक में मिलता है। उजास नाटक का रामानंद दलितों को मंदिर में प्रवेश देना चाहता है क्योंकि उसे सरपंच बनना है। जब कालिया भोलू तथा बुजुर्ग को रामानंद की सरपंच बनने के लिए वोट भुनाने की नीति से अवगत कराता है तब बुजुर्ग बिना दमड़ी लिए मंदिर काम की दुहाई देता है–"अरे चुप रह कालिया। चौबीस घंटा राजनीत की दांत घिसाई। मंदर के एक–एक पत्थर और एक–एक ईंट तले हमारा पसीना दफन है। धरम का काम था, बिना दाम दमड़ी लिए टूट कर किया। बस पाव भर चना और पाव भर गुड़ मिलता था, उस समय, हर रोज।"[7] स्पष्ट है कि बुजुर्ग मंदिर का काम धर्म का काम समझकर करते हैं, लेकिन असल में वह शोषण ही होता है। इस संदर्भ में कालिया लंबी सांस लेते हुए कहता है–"हूँ। शोषण था पूरा।"[8] स्पष्ट है कि मंदिर का काम धर्म का काम जरूर है; मगर दलितों का शोषण भी था। संक्षेप में कहा जा सकता है कि आज हर सशक्त व्यक्ति निःशक्तों का शोषण कर रहा है। पाखंडी भगत आम जन को डरा–धमकाकर शोषण कर रहे हैं। धर्म के नाम पर दलितों का शोषण आम बात बन गई है। पाखंड़ी लोग अंधविश्वास का फायदा उठाकर लोगों का शोषण करते हैं।

शैक्षिक सजगताः

शिक्षा से व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की उन्नति हो जाती है। असल में शिक्षा मनुष्य की अंदरुनी क्षमताओं का विकास करती है। व्यक्ति के व्यक्तित्व में निखार लाती है। शिक्षा अंधकार को मिटाकर ज्ञानरुपी प्रकाश फैला देती है। "शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की छिपी हुई क्षमताओं का विकास करके उसके संपूर्ण व्यक्तित्व को आकार देना था, जिससे कि उसे जीवन की पूर्णता की उपलब्धि हो सके।"[9] स्पष्ट है कि शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व को आकार देती है। शिक्षा से व्यक्ति का बौद्धिक, मानसिक, चारित्रिक और भावनिक विकास हो जाता है। वंचितों के लिए स्कूल मंदिर समान है और उसमें दी जा रही शिक्षा मूर्ति के आशीर्वचन के समान है। इसी स्थिति का प्रमाण रत्नकुमार सांभरिया लिखित 'उजास' नाटक में मिलता है। प्रस्तुत नाटक के रामानंद, रामबिहारी, सुनाराम मंदिर–प्रवेश समिति का गठन करते हैं और संघर्ष का मार्ग प्रशस्त करते हैं तब सुनराम और रामबिहारी पंडित रामानंद के नाम की जयघोष करते हैं; मगर कालिया कहता है–"रामानंद जी, मंदिर–प्रवेश कराने से कौनसा भला हो जाएगा, हमारा? अगर कुछ करना चाहते हो, तो हमारे बच्चों को शिक्षा दिलाओ। हमारे लिये स्कूल मंदिर हैं। शिक्षा मूर्ति है।"[10] कालिया शिक्षा से वंचित लोगों के लिए शिक्षा के द्वार खुले करने की अपील करता है; जो शिक्षा भगवान के समान है। डॉ. बाबासाहब अंबेडकर ने दलितों को शिक्षित बनो, संगठित बनो और संघर्ष करने का मूलमंत्र दिया था। इसी स्थिति का प्रमाण 'उजास' नाटक में मिलता है। प्रतिष्ठित ब्राह्मण रामानंद ग्रामीणों को सिर्फ संगठित होने और संघर्ष करने की ही बात करता है तब प्रतिष्ठित विचारों का दलित युवक कालिया रामानंद को याद दिलाता है कि "सबसे पहले शिक्षित बनो।"[11] स्पष्ट है कि डॉ. बाबासाहब अंबेडकर ने दलितों को शिक्षित बनने का मंत्र दिया क्योंकि शिक्षा से वह अपने अन्याय–अत्याचार दूर कर सकता है, संगठित होकर संघर्ष कर सकता है। सार यह कि शिक्षा से ही सम्मान मिलता है क्योंकि शिक्षा ही समाज को उन्नति की ओर ले जाती है। शिक्षा से व्यक्ति का जीवन स्तर और विचार में परिवर्तन आ जाता है। वंचितों के लिए शिक्षा आशा की किरण है, उम्मीद की लौ है और अशिक्षित समाज के अंधेरा दूर कर प्रकाश की ओर ले जाने की यथार्थवादी पहल भी।

सामाजिक यथार्थः

व्यक्ति समाज की सबसे छोटी इकाई है; मगर व्यक्ति का सर्वांगीण विकास परिवार और समाज में ही होता है। हालाँकि मनुष्य ने अपनी उन्नति और सुरक्षा हेतु समाज व्यवस्था का गठन किया है। परिणामी समाज एवं राष्ट्र का संचालन हो रहा है। प्राचीन काल से हमारी समाज व्यवस्था चातुवर्ण्य समाज व्यवस्था रही है। इसी व्यवस्था ने जातीय भेदभाव एवं छुआछूत को जन्म दिया है। इससे मानवी मूल्य विघटन होते जा रहे हैं, मगर आधुनिक काल में शिक्षा का प्रचार–प्रसार, वैज्ञानिक प्रगति, सूचना क्रांति, ज्ञान के विस्तार के कारण शोषितों को अपने पर हो रहे अन्याय–अत्याचार का एहसास हो रहा है और उनका स्वाभिमान भी जाग उठा है। इसी कारण उनके बगावती तेवर दिखाई दे रहे हैं। समाज का यह कडुआ सच रत्नकुमार सांभरिया लिखित 'उजास' नाटकों में चित्रित हुआ है। शिक्षा से मानव जीवन के अज्ञान को दूर

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- EISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.711 / January 2025 / Special Issue 16 Volume I (A)

करती है और ज्ञानरुपी प्रकाश फैला देती है। कई लोगों के लिए स्कूल मंदिर समान है और उसमें दी जा रही शिक्षा मूर्ति समान। जब रामानंद, रामबिहारी, सुनाराम मंदिर–प्रवेश की रणनीति तैयार करते हैं और संघर्ष का मार्ग अपनाते हैं। तब सुनराम और रामबिहारी नेता के रूप में पंडित रामानंद का जयघोष करते हैं। कालिया मंच पर आता है और वह रामानंद से मंदिर प्रवेश के बजाय दलित समाज के बच्चों को शिक्षा दिलाने की बात करता है। जब रामानंद उसे नाम पूछता है तब कालिया रामानंद से कहता है–"रामानंद जी, आप बार–बार बाबासाहब का नाम लेकर हमें बेवकूफ मत बनाओ। उनका भाग्य, भगवान, मूर्ति और आरती में कतई विश्वास नहीं था। कालाराम मंदिर–प्रवेश की मुहिम तो वर्ण–व्यवस्था को तोड़ने की एक मिसाल थी। ब्राह्मणवादी मानसिकता को उजागर करना था।"[12] कालिया का उक्त कथन वर्ण–व्यवस्था और ब्राह्मणवादी मानसिकता को उजागर करता है और सामाजिक यथार्थ को हमारे सामने लाता है। मंदिर के पुजारी सेवानंद के भाई रामानंद दलितों को गाँव के मंदिर में प्रवेश दिलाना चाहते हैं। शिक्षित दलित युवक कालिया रामानंद की राजनीति अच्छी तरह से जानता है कि गाँव में सरपंच के चुनाव आ रहे हैं। दलितों के वोट भुनाने के लिए वे चुपड़ी–चुपड़ी बातें कर अमूल्य वोट हासिल करना चाहते हैं। तब भोलू कालिया की बात नहीं मानता। तब कालिया चुनाव की वास्तविक स्थिति को अवगत कराता है–"समझो, वक्त को समझो। बात को परखो। असली नौटंकी चुनाव ही हैं। पांच साल पहले शेरसिंह ने कुएँ पर चढ़ने का सब्जबाग दिखाकर, हमारे वोट हथिया लिये थे। ओबीसी की सीट थी, पिछले वर्ष। इस वर्ष ग्रामपंचायत की यह सीट सामान्य हो गयी है, न। पंडित रामानंद हमारे वोटों पर सरपंच बन जाने का मंसूबा पाले हुये हैं। गाँव में सबसे ज्यादा वोट हम दलितों के ही हैं। हम ठहरे वाल्मीकि। उनकी नजरों में निपट मूरख। अज्ञानी। झाडू, पंजा, परात...। जूठन खाने वाले। दारू के पाउच के बदले बिक जाने वाले।"[13] आज दलित समाज अपने वोट का महत्व नहीं जानता। दारू के पाउच पर उनके वोट बिकते हैं। सवर्ण लोग ग्रामपंचायत चुनाव को सामने देखकर अज्ञानी दलितों को लालच दिखाते हुए वोट को हथिया लेते हैं। आज दलित अपने अमूल्य वोट सस्ते में बेचते हैं, जिसका फायदा सवर्ण समाज उठा रहा है। सवर्ण समाज दलित समाज के वोट को हथिया कर उन पर ही रोब जमाता है। सारांश यह है कि आज जाति–पांति के बंधन शिथिल होने के कारण समाज में अंतरर्जातीय विवाह हो रहे हैं। फिर भी समाज में ऊँच–नीच का भेदभाव कम नहीं हुआ है। आज दलित अपने अमूल्य वोट शराब के लालच में बेच रहा है; जिसका फायदा सवर्ण समाज उठा रहा है। शिक्षा से मानव जीवन का अज्ञानरूपी अंधकार नष्ट हो रहा है।

अन्याय–अत्याचार का विरोध:

वस्तुतः सामंतीवादी मानसिकता ने दलित वर्ग पर हमेशा अन्याय–अत्याचार किया है। यह अन्याय–अत्याचार शारीरिक, मानसिक प्रताड़ना और आर्थिक शोषण के रूप में हो रहा है। विजयकुमार अग्रवाल के अनुसार "शोषण का दूसरा स्वरूप अत्याचार है। यद्यपि आर्थिक शोषण भी अत्याचार ही है, किंतु यहाँ अत्याचार से अर्थ शारीरिक यातना, गाली–गलौज, आगजनी एवं हत्याकांड आदि से है। अत्याचार जहाँ सामंत वर्ग के अहम् की तुष्टि का माध्यम से सामान्य वर्ग पर अपना आतंक बनाये रखता है, जिससे उसके विशेषाधिकारों के विरुद्ध आवाज न उठे।"[14] स्पष्ट है कि सामंती वर्ग हमेशा आमजन पर अन्याय–अत्याचार करता है। सामंती वर्ग की घिनौनी हरकतों का आमजन शिकार होता रहा, अपमानपूर्ण जीवन जीता रहा। शोषकों के बढ़ते अन्याय–अत्याचार के परिणामस्वरूप असहाय सामान्य वर्ग अपने अस्तित्व की पहचान खो बैठा है। निःशक्तों के धनीधोरा कहलाने वाले लोग निःशक्तों पर अन्याय–अत्याचार करते हैं। उन्हें जानबूझकर परेशानी में डाल देते हैं। इसी अन्याय–अत्याचार का चित्रण रत्नकुमार साांभरिया कृत 'वीमा' नाटक में मिलता है। जमन वर्मा अपने पर हो रहे अन्याय का बखान करने नेत्रहीन के धनीधोरा आका के पास जाता है। रास्ते में एक चपड़ासी जमन से टकराता है और जमन वर्मा से पहचानता है। खस्ता हालत देखकर वह जमन की पूछताछ करता है। जब श्यामाजी द्वारा उसकी पत्नी वीमा का अपहरण करने की बात उसे पता चलती है तब वह जमन से कहता है–"अरे–अरे, तभी तो! नेत्रहीन के साथ ऐसा अन्याय! आका से मिलो। वे कुछ नहीं कर पाएं, थाने में एफ. आई. आर. दर्ज कराओ तुरंत। भला यह भी कोई बात हुई, बेचारे नेत्रहीन की पत्नी का ही अपहरण करा दिया! आमजन का जीना मुश्किल है।"[15] स्पष्ट है कि श्यामाजी नेत्रहीन जमन की पत्नी वीमा का अपहरण कर अन्याय करते हैं। जमन पर हो रहे अन्याय दूर करने के लिए जमन का दोस्त देवत पत्रकार झा को बुलाकर सारी कथा बताता है और स्कूल से निकाल देने की बात भी बताता है। तब झा कहता है–"अरे–अरे, स्कूल से निकाल दिया? नौकरी छीन ली बेचारे नेत्रहीन की? यह तो अन्याय है। अनर्थ है। ज्यादती है सरासर।"[16]

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- EISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.711 / January 2025 / Special Issue 16 Volume I (A)

पत्रकार झा का कथन जमन के साथ हुए अन्याय–अत्याचारी व्यवहार का पर्दाफाश करता है। जमन को नौकरी से निकालकर उसके साथ सरासर अन्याय–अत्याचार ही है।

डॉ. बाबासाहब अंबेडकर ने छुआछूत और जातिभेद की जड़ होने वाला मनस्मृति ग्रंथ जला दिया गया था; मगर गाँवों में आज भी मनुस्मृति जिंदा है। देश में संविधान लागू होने के बावजूद दलितों के साथ अत्याचार किए जाते हैं; उन्हें मंदिर प्रवेश नहीं दिया जाता। इन सारी स्थितियों का जिक्र रत्नकुमार सांभरिया कृत 'उजास' नाटक में मिलता है। प्रस्तुत नाटक के एक प्रतिष्ठाकांक्षी ब्राह्मण रामानंद सलपुर गाँव की वाल्मीकि बस्ती में जाते हैं जहाँ वे दलितों का प्रबोधन कराते हैं। वे जातिभेद को जड़ से मिटाना चाहते हैं और दलितों को मंदिर प्रवेश दिलाना चाहते हैं। इसके लिए वे लोगों को डॉ. बाबासाहब अंबेडकर द्वारा जातिभेद की जननी मनस्मृति जलाने की याद दिलाते हैं। तब कालिया उसके सही तिथि 25 दिसंबर, 1927 की याद दिलाता है। वह यही भी याद दिलाता है कि उसे तीली दिखाने वाले एक ब्राह्मण ही थे। इस पर स्वयं रामानंद कहता है–"यह आदमी तो बहुत समझदार नजर आता है। (सबसे) हाँ तो अब हम आजाद हो गये हैं। बाबा साहब का बनाया संविधान लागू हो गया है। लेकिन जलने के बाद भी गाँवों में जिंदा है, वही मनुस्मृति। कारण आप लोग मंदिर में नहीं जा सकते हो, मंदिर की निचली सीढ़ी पर ही माथा टेक लेते हो। अनर्थ नहीं है, क्या? अन्याय नहीं है, क्या? पशुवत व्यवहार नहीं है, क्या? इसके विरोध में हमें संघर्ष करना होगा। जातिवाद को मुँहतोड़ जवाब देना होगा। मंदिर–प्रवेश का हक लाजिमी है।"[17] स्पष्ट है कि आज भी गाँवों में दलितों को मंदिर में प्रवेश नहीं दिया जाता। मंदिर बनवाने में उनकी मदद जरूर ली जाती है, लेकिन उन्हें मंदिर में जाकर भगवान का दर्शन करने का अधिकार नहीं दिया जाता।

निष्कर्षतः कहा जाता है कि समाज में आज भी कुछ लोगों की जहन में जात–पांत भरा माहौल जिंदा है। वे जाति–पाँति मिटाना अपने आपको मिटाने समान मानते हैं। निम्न जाति के लड़के द्वारा उच्च जाति की लड़की के साथ शादी करना धर्मघात मानते हैं। आज सशक्त व्यक्ति निःशक्तों का शोषण कर रहा है। निःशक्तों की हर कामयाबी को वे तोड़ने का प्रयास करते हैं, मगर सशक्त उन्हें कामयाब नहीं होने देते, अपनी मांगों से टस–से–मस नहीं होते। अखबार भी पैसों की भाषा करते हैं। परिणामी वे अन्याय–अत्याचार का विरोध तो करते हैं मगर उन्हें न्याय नहीं मिलता। परिणामी वे संगठित होकर संघर्ष करते हैं। पाखंडी भगत आम जन को डरा–धमकाकर शोषण कर रहे हैं। धर्म के नाम पर दलितों का शोषण आम बात बन गई है। पाखंड़ी लोग अंधविश्वास का फायदा उठाकर लोगों का शोषण कर रहे हैं। सत्ता किसी के बाप की बपौती नहीं और न किसी जाति की ठेकेदारी है बल्कि वह विकास के द्वार की चाबी है। असल में राजनीति कीचड़ भी है और फूल भी। राजनीति व्यक्ति–व्यक्ति पर निर्भर हुआ करती है। मीठी–मीठी बातें कर वोटरों को लुभाया जाता है और गरीबों के अमूल्य वोट ठगाएँ जाते हैं। शिक्षा से व्यक्ति के विचार में बदलाव आ जाता है। दलितों के लिए शिक्षा आशा की किरण है और अशिक्षित समाज के अंधेरा दूर कर प्रकाश की ओर ले जाने की पहल भी है। आज जाति–पांति के बंधन शिथिल होने के कारण समाज में अंतरर्जातीय विवाह हो रहे हैं। लेकिन समाज में ऊँच–नीच का भेदभाव कम नहीं हो रहा है। आज दलित वर्ग सामंतों के अन्याय–अत्याचार का विरोध करने लगे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. सुभाष चंद्र कुशवाहा, ऊंच–नीच की पाठशाला, हंस, राजेंद्र यादव संपा., सितंबर 2010, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 82.
2. रत्नकुमार सांभरिया, वीमा, लोकमित्र प्रकाशन, दिल्ली, संस्करणः 2014, पृष्ठ 36.
3. वही, पृष्ठ 74.
4. रत्नकुमार सांभरिया, उजास, लोकमित्र प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करणः 2014, पृष्ठ 10.
5. रत्नकुमार सांभरिया, वीमा, लोकमित्र प्रकाशन, दिल्ली, संस्करणः 2014, पृष्ठ 43.
6. वही, पृष्ठ 43–44.
7. रत्नकुमार सांभरिया, उजास, लोकमित्र प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करणः 2014, पृष्ठ 15
8. वही, पृष्ठ 15.
9. राजेश कुमार, शिक्षा जगत् में सन्नाटा, अजय कुमार गुप्ता (संपा.), गगाञ्चल, अप्रैल–सितंबर 2006, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली, पृ. 82
10. रत्नकुमार सांभरिया, उजास, लोकमित्र प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करणः 2014, पृष्ठ 21.
11. वही, पृष्ठ 20.
12. वही, पृष्ठ 21.
13. वही, पृष्ठ 14–15.

14. विजयकुमार अग्रवाल, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में सामंती जीवन, विक्रम प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करणः 1990, पृष्ठ 193.
15. रत्नकुमार सांभरिया, वीमा, लोकमित्र प्रकाशन, दिल्ली, संस्करणः 2014, पृष्ठ 31.
16. वही, पृष्ठ 66.
17. रत्नकुमार सांभरिया, उजास, लोकमित्र प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करणः 2014, पृष्ठ 19.